श्री राम चन्द्र मिशन®

मई २०१०

भाग ३, अंक ३

India ECHOES
ONE WORLD ONE HUMANITY

For Private Circulation Only

बाबूजी महाराज का १११वाँ जन्मोत्सव

तिरुप्पूर के डी. जे. पार्क में २९ अप्रैल से १ मई, २०१० तक बाबूजी महाराज की १११वीं सालगिरह मनाई गई। इस अवसर पर ९००० अभ्यासी उपस्थित थे। २९ तारीख को गुरुदेव ने सत्संग करवाने के बाद बहुत सारे नये प्रकाशनों का विमोचन किया। ३० तारीख की सुबह गुरुदेव ने सत्संग करवाया तथा बाबूजी द्वारा दिये गये तीन संदेशों को पढ़ा। तत्पश्चात उन्होंने ९ विवाह सम्पन्न करवाये।

१९ अप्रैल, २०१० को (बाबूजी की महासमाधि के दिन) जो पहला सन्देश दिया गया है, बाबूजी कहते हैं, "हमारी पद्धति में सारा प्रयत्न, आत्मा की अपनी आकांक्षा को, दिव्यता के लिये पुष्पित करने के लिये किया जाता है, जोकि इसकी यात्रा का अन्तिम लक्ष्य है। उनको (अभ्यासियों को) शुरू से बुनियादी सिद्धान्त दिये जाते हैं। अपने प्रयास और धैर्य के द्वारा विकसित होना, हमारे जिज्ञासुओं के ऊपर निर्भर है।"

२९ अप्रैल, २०१० को मिला दूसरा संदेश: यहाँ नीचे, श्रद्धालु आत्माओं का यह सम्मेलन हृदयस्पर्शी है। सही मायनों में एक प्रेम–गीत हम तक पहुँचता है। ...जन्म के इस सालगिरह समारोह के परे, ऐसे अवसर पर पूरा मिशन ही क्षितिज पर छा जाता है। यह हृदयों को प्रकाशित करते हुए दिव्य प्रवाह को आकर्षित करता है।"

३० तारीख की सुबह प्राप्त हुए संदेश में, खासकर गुरुदेव को सम्बोधित करते हुए बाबूजी कहते हैं, " मेरे पुत्र, जन्म से ही प्रबन्धक, तुम मनुष्यों के नेता हो। यह आयाम हमारे मिशन में तुम्हें एक विशेष स्थान देता है, जहाँ आने वाली शताब्दियों में तुम्हें ऊँचाइयों के प्रतीक के रूप में रखा जायेगा। ईश्वर करे कि भावी संसार उस अनोखी शक्ति को पहचानकर, बेहतरी के लिये एक हो जाये, जिसके बिना इसका बहुत पहले ही विनाश हो चुका होता।"

गुरुदेव ने कहा कि एक साधक या भक्त के लिये तीन चीजें ज़रूरी हैं गुरुदेव के प्रति प्रेम, गुरुदेव के साथ सत्संग और गुरुदेव का आज्ञापालन। हममें से हर एक को अपनी दैनिक साधना करके दिव्य ज्योति को जलाये रखना चाहिये। उन्होंने बाबूजी महाराज के साथ गुजारे हुए दिनों को याद करते हुए कहा कि वे प्रेम से फटते हुए दिलों के साथ भंडारे के लिये इकट्ठा होते थे और उनमें आध्यात्मिक विकास के लिये कोई अपेक्षा नहीं होती थी। उन्होंने कहा, "यह देने–लेने वाली बात नहीं है, इसमें तो आपके पास जो कुछ भी है, उसे आप मैदान में रख देते हैं – वह सब कुछ पाने के प्रयास में , जो वह अपनी इच्छा और खुशी से, अपने मनचाहे समय पर आपको दे सकते हैं, जब वह आपको इसके लायक समझते हैं।"

For the complete audio of this speech please visit http://www.sahajmarg.org/audio/talk/april-30-2010-tiruppur

सहज मार्ग जीवन की सादगी सिखाता है। ...आप में से हर एक को अपने व्यक्तिगत जीवन में सरल बनने के लिये भरसक प्रयास करना चाहिये, अपनी आवश्यकताओं को कम करना चाहिये, अपनी इच्छाओं का सरलीकरण करना चाहिये, इस बात का ध्यान रखते हुए कि बाबूजी महाराज ने हमें आश्वासन दिया है कि हमारी ज़रूरतों को पूरा किया जायेगा, हमारी इच्छाओं के लिये कोई भी जगह नहीं है।

रात्रि–भोज के बाद आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लालाजी मेमोरिअल ओमेगा स्कूल के अध्यापकों का नृत्य, मुम्बई के अभ्यासियों द्वारा एक नाटक की प्रस्तुति तथा डा. जयन्ती और कुमारेश का संगीत कार्यक्रम शामिल था। अभ्यासियों ने आध्यात्मिक वातावरण में आनन्द उठाया और इससे सभी को गुरुदेव की सेवा और उनके कार्य में हिस्सा लेने का अवसर मिला।

गुरुदेव का दौरा

चेन्नई

जबलपुर में बसन्त उत्सव मनाने के बाद गुरुदेव १० फ़रवरी को चेन्नई वापस लौटे। वहाँ पहुँचने के तुरन्त बाद ही वे लालाजी मेमोरियल ओमेगा स्कूल में निर्माण कार्य देखने गये। वे एक बालक की भाँति बहुत ही उत्साहित थे; जबकि अभ्यासी लोग ये सोच रहे थे कि वे पिछले कुछ हफ्तों की इतनी दुष्कर यात्रा के बाद आराम क्यों नहीं कर रहे हैं। अगले कुछ दिनों तक उन्होंने आराम किया, जिसकी उन्हें बहुत ज़रूरत थी।

१५ फरवरी को गुरुदेव ने रूस के अभ्यासियों के साथ नाश्ता किया और शास्त्र, मन्दिर, धार्मिक पद्धतियों इत्यादि के बारे में उन सबसे बातचीत की। उन्होंने उन सब को बताया, "हमारे जीवन का उद्देश्य अपने वास्तविक घर जाना है, उसे प्राप्त करने के तरीके को धर्म कहा जाता था। लेकिन धर्म ने इस संसार के लोगों को विभाजित कर दिया है; जबकि आध्यात्मिकता सबको एकता में बाँधती है।"

भय को कैसे दूर किया जाये– इस प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा, "ईसाई धर्म में यीसू कहते हैं कि सम्पूर्ण प्रेम– भय को दूर कर देता है। हम किसी से पूर्णतः प्रेम नहीं करते, हम तो प्रेम ही नहीं करते; हम तो सिर्फ स्नेह करते हैं, हम निर्भर हैं, हमें ज़रूरत है। प्रेम कहाँ है? तो जहाँ प्रेम नहीं है, वहाँ भय है। हम सब सोचते हैं कि हम किसी से प्रेम करते हैं; लेकिन हम वास्तव में प्रेम नहीं करते। केवल प्रेम ही भय को दूर कर सकता है। यदि आप अपने पिता से डरते हैं, तो आप उनसे प्रेम नहीं कर सकते। यदि आप कहते हैं, 'मैं आपसे प्रेम करता हूँ' तो आपका वही मतलब होना चाहिये, नाकि सिर्फ औपचारिकतावश।"

With abhyasis from Mumbai

आगामी कुछ दिनों तक गुरुदेव, अभ्यासियों से खासकर विदेशी अभ्यासियों से मिलने में व्यस्त रहे। हर शाम को वे अपनी कॉटेज के लॉन में बैठते थे, अभ्यासियों से बातचीत करते थे और सामान्यतः इस सत्र का समापन उन सभी लोगों के लिये एक सिटिंग के साथ होता था, जिन्हें उस समय वहाँ पर उपस्थित होने का सौभाग्य प्राप्त होता था।

२५ तारीख को ध्यान–कक्ष में सत्संग करवाने के बाद गुरुदेव ने कुछ विवाह सम्पन्न कराये। मुम्बई से करीब ४०० अभ्यासियों का एक विशाल समूह गुरुदेव के सान्निध्य में रहने के लिये आया हुआ था। उन सबको अक्सर सिटिंग देकर और व्यक्तिगत रूप से उनमें से बहुतों से मिलकर गुरुदेव ने उन सबका खास ख्याल रखा। शनिवार की शाम को वे उन सबसे डोमेट्री 'ए' में मिले और बातचीत की। उन्होंने सभी अभ्यासियों को उनसे मिलने के लिये चेन्नई आने के लिये धन्यवाद दिया क्योंकि उनके लिये सभी केन्द्रों का दौरा करना इन दिनों मुश्किल हो गया है। उन्होंने आशा जताई कि वे सब लोग वहाँ बार–बार आते रहेंगे।

२८ तारीख को मुम्बई के अभ्यासियों ने बाबूजी महाराज के जीवन पर आधारित एक विशेष नाटिका प्रस्तुत की। इस नाटिका में बाबूजी के जीवन की विभिन्न घटनाओं को दिल छू लेने वाले अन्दाज में प्रदर्शित किया गया था। सत्र के समाप्त होने के बाद गुरुदेव, सभी प्रतिभागियों से अपनी कॉटेज में मिले तथा बाबूजी की खूबसूरत यादों का स्मरण करते हुए उन सबके साथ समय बिताया। वहाँ का वातावरण दिव्यता से ओतप्रोत था और सभी ने महसूस किया कि मानो वे वास्तव में ही शाहजहाँपुर में थे।

त्रिची

३० अभ्यासियों के साथ गुरुदेव ने त्रिची के लिये प्रस्थान किया। त्रिची पहुँचने पर वहाँ के स्थानीय अभ्यासियों ने उनका स्वागत किया। वे सीधे जानकी फार्म गये, जो शहर से ८ किमी की दूरी पर स्थित है।

उन्होंने बुधवार, ३ मार्च को आश्रम में सत्संग करवाया। वापस आने पर वे गौशाला गये और ५ नव जन्में बछड़ों का नाम रखा। वे नाम रखते समय बहुत ही खुशमिज़ाज़ नज़र आ रहे थे।

गुरुदेव ४ मार्च को जानकी फार्म के खेतों में धान की बुआई का निरीक्षण करने गये। कुछ अभ्यासी भी बुआई करने में शामिल हो गये। खेतों में दलदल होने के बावजूद वहाँ एक त्योहार जैसा माहौल था। गुरुदेव ने सभी उपस्थित अभ्यासियों को सत्संग करवाया। शाम के समय गुरुदेव, घर के सामने वाले लॉन में बाहर आकर बैठे और कुछ विदेशी अभ्यासियों से मिले। उसके बाद उन्होंने सत्संग करवाया।

७ मार्च को गुरुदेव ने ध्यान–कक्ष में सत्संग करवाया जिसमें बहुत सारे स्थानीय अभ्यासियों ने भाग लिया। वे बहुत प्रसन्नचित्त और स्वस्थ नज़र आ रहे थे। अपने पड़ाव के दौरान वे कई अवसरों पर फार्म में टहलने निकले। वहाँ पर अपने इस शान्त अन्तराल में विश्राम (जिसकी उन्हें बहुत ज़रूरत थी) के साथ–साथ वे बहुत सारा काम भी करते रहे। गुरुदेव १० मार्च को चेन्नई वापस आये और खड़गपुर जाने हेतु कोलकाता के लिये प्रस्थान किया।

क्रेस्ट– खड़गपुर

गुरुदेव १२ तारीख को परिसर में पहुँचे और शाम के ५ बजे सत्संग करवाया। १२ से १४ तारीख तक क्रेस्ट, खड़गपुर में हाल ही बने प्रशिक्षकों के लिये द्वितीय–एन पी टी पी (नये प्रशिक्षकों के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम) का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी का उद्देश्य नये प्रशिक्षकों को सहज मार्ग के विभिन्न पहलुओं के बारे में अवगत कराना था, जिससे वे प्रशिक्षक के रूप में अपने कर्तव्य को बखूबी निभा सकें।

गुरुदेव ने 'गज़ीबो' का उद्घाटन किया और वहाँ बैठकर विश्राम किया। धीरे से अभ्यासी भी उनके चारों तरफ घेरा बनाकर बैठ गये। किसी ने उनसे पूछा कि क्या अभ्यासी यहाँ आकर बैठ सकते हैं। उन्होंने जबाब दिया, "हाँ, यह हर एक के लिये है।" उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इस जगह की सफाई, शुद्धता और पवित्रता को बनाए रखना चाहिये। बाद में गुरुदेव ने, जिन स्थानों पर गणेश और गंगा की मूर्तियां लगाई जानी थी, वह जगह बताई और उसके ढ़ाँचे के बारे में चर्चा की। अगले दिन से ही काम शुरू हो गया ताकि आने वाले दिनों में गुरुदेव, मूर्तियों को लगाने के काम का निरीक्षण कर सकें।

१५ से २१ मार्च तक क्रेस्ट ने ईरान के अभ्यासियों के लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी की मेज़बानी की। उन्हें गुरुदेव के सान्निध्य में रहने तथा साथ में कुछ समय बिताने के लिये आमन्त्रित किया गया था।

गुरुदेव ज्यादातर सत्संग के दौरान ध्यान-कक्ष में टहलते हुए आये और जोश भरे सलाम के साथ प्रवेश किया। ईरान के अभ्यासी भी उतनी ही गर्मजोशी और उत्साह के साथ एक ही आवाज़ में सलाम कहकर उनका ज़बाब देते थे। ईरानी अभ्यासियों के लिये अलग-अलग तरह के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें युवाओं की बैठक, दैनिक अभ्यास के बारे में स्पष्टीकरण, विभिन्न विषयों पर परिचर्चा जिनमें महिलाओं की भूमिका, दस नियम, नैतिकता और चरित्र निर्माण, वी बी एस ई इत्यादि विषय शामिल थे। वहाँ ३० ईरानी प्रशिक्षकों के लिये एक प्रशिक्षक मीटिंग का भी आयोजन किया गया जिसमें शाम के प्रश्नोत्तर सत्र में गुरुदेव भी उपस्थित थे। गुरुदेव ने ईरान के लिये ५ नये प्रशिक्षक तैयार किये। हर एक को गुरुदेव के साथ प्रश्नोत्तर सत्र में भाग लेने का मौका मिला और इसी के साथ पूरे सप्ताह का समापन हुआ।

ईरानी अभ्यासियों का यह दौरा संजोग से ईरानी नव वर्ष के दौरान पड़ा। उनकी खुशियों में चार चाँद लगाते हुए चहर-शानबेह-सूरी नामक समारोह आखिरी मंगलवार की शाम को नौरुज़ से पहले मनाया गया। तीन जगह छोटी अग्नि ज्वालायें प्रज्जवलित की गयीं, जिसे लोगों ने ड्रम और गानों के साथ कूदकर पार किया। गुरुदेव अपनी गोल्फ कार्ट में आये और इस समारोह के साक्षी बने।

२० मार्च को ईरानी नववर्ष- नौरुज़ था। परम्परागत तरीके से भोजनालय में खाने की मेज़ सजाई गई और मेज़ पर रखी हुई हर चीज के महत्व के बारे में गुरुदेव को संक्षेप में बताया गया। एक संक्षिप्त संगीत व नृत्य का कार्यक्रम हुआ। उसके बाद ईरानी अभ्यासियों द्वारा तैयार किये गये रात के भोजन का गुरुदेव के साथ-साथ भोजनालय में उपस्थित सभी अभ्यासियों ने लुफ़्त उठाया। तत्पश्चात नववर्ष के आगमन पर रात १०.३० बजे सत्संग की आश्चर्यजनक घोषणा हुई, जिसने पूरे दिन व पूरे दौरे को सम्पूर्ण बना दिया।

१७ मार्च को गुरुदेव ने गंगा और गणेश की मूर्तियों की स्थापना का निरीक्षण किया। वे २१ मार्च को कोलकाता वापस आये और भाई अजय भट्टर के निवास-स्थान पर ठहरे। अश्रु भरे अभ्यासियों को पीछे छोड़ते हुए गुरुदेव २४ मार्च को चेन्नई के लिये रवाना हो गए। ईरान के अभ्यासी, अश्रु के माध्यम से अपना प्रेम प्रकट करते हुए प्रतीत हो रहे थे। वे गुरुदेव के सान्निध्य में बिताये गये इस अद्भुत सप्ताह को अपने हृदय में संजोकर ले गये।

कर्नाटक सम्मेलन

चेन्नई आने के बाद गुरुदेव की तबियत ठीक नहीं थी और आगुन्तकों को कॉटेज में जाने की मनाही थी। गुरुदेव जब रविवार को सत्संग करवाने आये, तो आश्रम में ठहरे हुए अभ्यासियों को उन्हें देखने का मौका मिला।

कर्नाटक से ३००० से भी ज्यादा अभ्यासी २ से ४ तारीख के बीच वहाँ एकत्रित हुए। गुरुदेव ने अभ्यासियों के हृदयों को लबालब भरते हुए इन ३ दिनों में ५ सत्संग करवाये।

मणपाक्कम आश्रम की नई ए. एम. सी. ने पूरे आश्रम की सफाई कराने के लिये बहुत सारी योजनायें बनाई हैं। २५० कर्मठ स्वयंसेवकों की कार्यसेना ने तपते सूरज के नीचे आश्रम के चारों तरफ पड़े हुए मलबे को साफ किया। मैन्गो ग्रूव, खाद तथा पार्किंग की जगह के साथ-साथ कैन्टीन और टॉयलेट की भी सफाई की गई। यह बहुत बड़ा काम था जिसे स्वयंसेवकों ने बड़े उत्साह के साथ अपने हाथों में लिया और कार्य के दौरान उन्होंने गुरुदेव की उपस्थिति को महसूस किया।

३ तारीख को गुरुदेव ने अपनी कॉटेज में टी.वी. पर सांस्कृतिक कार्यक्रम देखा। बाद में वे प्रतिभागियों से अपनी कॉटेज में मिले और उन सबके साथ कुछ समय बिताया। विज्ञान और चमत्कार की प्रदर्शनी में बच्चों ने वी बी एस ई के पाठ्यक्रम से बहुत सारे प्रयोगों को दर्शाया। ४ अप्रैल को भाई दुरईस्वामी अय्यर ने रविवार के सत्संग के बाद सबके सामने अपने विचारों को रखा। उसके बाद गुरुदेव ने भाषा और क्षेत्र की अंधभक्ति से दूर रहने की ज़रूरत पर एक सन्क्षिप्त वार्ता दी।

आगामी सप्ताह को गुरुदेव ने आश्रम में शान्तिपूर्वक बिताया। उन्होंने ९ तारीख को सत्संग के बाद ९ विवाह सम्पन्न करवाये। १४ तारीख को तमिल और मलयाली नववर्ष के अवसर पर उन्होंने सत्संग करवाया, जिसमें लगभग ४५०० स्थानीय अभ्यासियों ने भाग लिया। १६ तारीख को गुरुदेव, कोयम्बतूर होते हुए तिरुप्पूर के लिये रवाना हुए। बाबूजी के जन्मोत्सव पर २९, ३० अप्रैल और १ मई को गुरुदेव, तिरुप्पूर में ही रहेगें।

नये प्रकाशन

हार्टस्पीक २००९

हार्टस्पीक२००९ – इस श्रृंखला में एक नई कड़ी है, इसमें गुरुदेव के शीर्षक वर्ष में भारत–भ्रमण के दौरान दिए गए प्रेरणादायक व्याख्यान तथा अनौपचारिक वार्ताएं शामिल हैं।

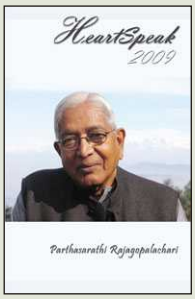

तमिल वार्ताओं का एम.पी ३ संग्रह

इसमें तमिलनाडु के विभिन्न स्थानों जैसे मदुरै, तिरुप्पूर, त्रिची, चेन्नै आदि में दी गई वार्ताओं का संकलन है। यह श्रृंखला की दूसरी कड़ी है जिसमें तीन दशक पुरानी अर्थात १९७९ में दी गई वार्ता शामिल है। इसमें लगभग ४ घंटों की रिकार्डिंग, कुछ आश्चर्यजनक अनौपचारिक वार्तालाप और गुरुदेव के साथ प्रश्नोत्तरी सत्र शामिल हैं। इनमें गुरुदेव द्वारा बहुत से व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर दिये गये हैं।

फोटो प्रकाशनों का विमोचन

बाबूजी–पिक्चर एलबम

इस श्रृंखला में विमोचित होने वाला पहला एलबम, जिसमें बाबूजी के चित्रों का संकलन है। क्लासिक ब्लैक बोर्ड पेपर के एलबम में २० फोटो लगाये गये हैं।

फोटोग्राफ

हमारे गुरुदेव के हाल ही में लिये गये फोटोग्राफ सहित बाबूजी के करीब २० फोटो का संग्रह है।

पुरातन फोटो

आकार, माउन्ट तथा फ्रेम के विकल्पों के साथ बाबूजी और गुरुदेव के फोटो की नई श्रृंखला पेश की जा रही है।

Reality At Dawn (Kannada - Reprint)

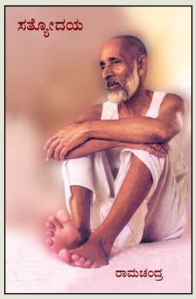

Daily Reflections (Chinese)

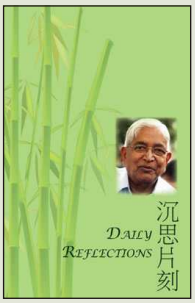

Principles of Sahaj Marg - Vol. I

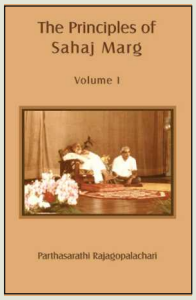

Role of Master in Human Evolution (Tamil)

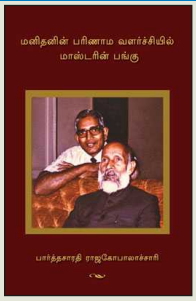

Commentary on Ten Maxims (Marathi)

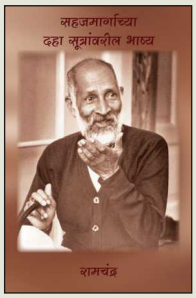

प्रियतम से प्रियतम तक का सफर

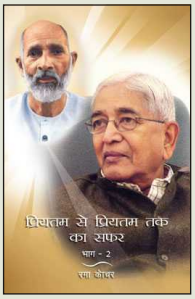

वी.बी.एस.ई की गतिविधियां – धारवाड़

२७ मार्च को एस.डी.एम सेन्ट्रल स्कूल, धारवाड़ में एक वी.बी.एस.ई के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बंगलोर की बहन आशा और बहन माधुरी ने इस कार्यक्रम का संचालन किया। यहाँ आयोजित होने वाला इस प्रकार का यह दूसरा कार्यक्रम था।

अगस्त २००९ में एस.डी.एम. सेन्ट्रल स्कूल की प्रधानाचार्या बहन साधना ने एस.आर.सी.एम, हुबली द्वारा आयोजित वी.बी.एस.ई के कार्यक्रम में भाग लेने के बाद ऐसा ही कार्यक्रम आयोजित करने का अनुरोध किया था।

कार्यक्रम के दौरान मूल्यों, मूल्य ग्रहण करने की तीन अवधारणाओं, तथा मन का विनियमन जैसे विषयों को शामिल किया गया था। इस कार्यक्रम को प्रतिभागियों द्वारा खूब सराहा गया जैसा कि उनके द्वारा पूछे गये प्रश्नों की संख्या से उनकी रुचि का अंदाजा लगाया जा सकता था। उनकी राय थी कि स्कूल में इस प्रकार के कई कार्यक्रम होने चाहिए।

स्वयंसेवक प्रशिक्षण, काकिनाड़ा, आंध्र प्रदेश

आंध्र प्रदेश के काकिनाड़ा केन्द्र में १३–१४ फरवरी को दो दिन का ज़ोन स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम ज़ोन–प्रभारी भाई के. मधु द्वारा तैयार किया गया तथा काकिनाडा केन्द्र–प्रभारी भाई कोसुरी यदुसुर्या द्वारा कार्यान्वित किया गया। कार्यक्रम का विषय ज़ोन के उत्साही स्वयंसेवकों को केन्द्र में आयोजित की जा सकने वाली गतिविधियों के बारे में जानकारी देना था। इससे हमारे मिशन के उद्देश्य को हर एक व्यक्ति तक पहुँचाने में सहायता मिलेगी। इस दो दिवसीय कार्यक्रम को – वी.बी.एस.ई अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम, जनसभा का आयोजन और संचालन, घरों में की जाने वाली सभा आदि की तर्ज पर तैयार किया गया था। बच्चों के लिये चित्रकला, वैज्ञानिक तरीकों पर विवाद, नेतृत्व, खेल आदि विषयों की समय–सारणी पेश की गई थी। इस कार्यक्रम में १५० से अधिक अभ्यासियों ने भाग लिया और इसकी खूब प्रशंसा की।

रेडियो प्रसारण

१७ अप्रैल को तुमकूर, कर्नाटक के रेडियो सिद्धार्थ ने सहज मार्ग की ध्यान– प्रणाली के बारे में अधिक जानकारी पाने के लिये एक साक्षात्कार आयोजित किया था। बंगलोर केन्द्र की बहन वसंता कुमारी ने ४० मिनटों तक कन्नड़ भाषा में प्रश्नों के उत्तर दिये। हर एक के लिये सहज मार्ग कैसे लाभकारी है, आन्तरिक रूपान्तरण के लिये ध्यान की आवश्यकता, संतुलित जीवन, सहज मार्ग का मुख्य उद्देश्य तथा गुरुदेव की भूमिका आदि विषयों पर चर्चा हुई। रेडियो सिद्धार्थ एस.एस.आई.टी कॉलेज से प्रसारित समुदाय आधारित एफ.एम चैनल है और प्रतिदिन सायंकाल ६–८ बजे के बीच स्थानीय समुदाय के लाभार्थ कार्यक्रम प्रसारित करता है।

नये प्रशिक्षकों के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्रेस्ट, खड़गपुर में १२–१४ मार्च तक नये प्रशिक्षकों के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम का दूसरा बैच आयोजित किया गया । प्रत्येक दिन की गतिविधियों की शुरुआत प्रातः ६ बजे सामूहिक चर्चा से होती थी, जिसके बाद सत्संग तथा नाश्ता होता था। प्रातः ९ बजे के सत्र में विस्पर्स से लिये गये एक अंश के पठन और चिंतन के बाद वार्ताएं होती थीं। दोपहर के भोजन और विश्राम के बाद प्रतिभागी पुनः मिलते थे तथा सकारात्मक सोच, आंतरिक मार्गदर्शन का अनुसरण करना तथा परामर्श व सलाह से परहेज करने की आवश्यकता जैसे विषयों पर सामूहिक चर्चाएं होती थीं।

दूसरे बैच की एक नई विशेषता यह थी कि ६ में से ४ वक्ता पश्चिमी देशों से आये थे, जिन्होंने बाबूजी महाराज के सामने १९७० में सहज मार्ग में प्रवेश किया था। जर्मनी की डोरिट वार्निंग ने 'सहज मार्ग एक जीने का तरीका' और अल्मोड़ा के चुफाल भुपेन्द्र ने 'प्रशिक्षक का कार्य' विषय पर वार्ताएं दीं। दूसरे दिन भाई अजय भट्टर की 'प्रशिक्षक की भूमिका और दायित्व' पर एक वार्ता के बाद इटली के फौस्टो रुस्सो ने 'श्रद्धा–भाव' पर अपने विचार रखे। तीसरे दिन म्युनिख के ओटो रेचनैडर ने 'प्रेम और समर्पण भाव' विषय पर व्याख्यान दिया। इसके उपरान्त कनाडा की क्रिस्टीन प्रिसलैंड ने 'प्रशिक्षक के रूप में मैंने क्या जाना' विषय पर बाबूजी महाराज और पूज्य गुरुदेव के साथ किये गये वार्तालाप को कहानियों के रूप में प्रस्तुत किया। अंतिम वार्ता तिरुप्पूर के एन. प्रकाश, कार्यक्रम समन्वयक द्वारा दी गई, जिसका शीर्षक था 'उनका अनुसरण करो'। इसमें पिछले तीन दिनों की गतिविधियों और परिचर्चाओं का सारांश था और गुरुदेव का अनुकरण करते हुए भावी कार्यों के नज़रिये पर प्रकाश डाला गया। भावी प्रशिक्षण कार्यक्रम, भारत में विभिन्न स्थानों पर आयोजित किये जायेंगे।

'आतंकवाद को समझना और उस पर प्रतिक्रिया देना'

पूज्य गुरुदेव ने 'आतंकवाद को समझना और उस पर प्रतिक्रिया देना' विषय पर आयोजित सेमीनार में एस.आर.सी.एम का प्रतिनिधित्व करने के लिये भाई ए.पी. दुरई, संयुक्त सचिव तथा कर्नाटक दक्षिण ज़ोन के ज़ोनल–प्रभारी भाई शरद हेगडे को नियुक्त किया। इस सेमीनार का आयोजन २२–२४ फरवरी तक एक्युमेनिकल क्रिस्चन सेंटर द्वारा बंगलोर में किया गया था। इसमें भारत के विभिन्न हिस्सों और भिन्न–भिन्न धर्मों के लोग इस विषय पर अपने विचारों का आदान–प्रदान करने के लिये एकत्रित हुए थे। विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों को उनके विचार व्यक्त करने के लिए आमंत्रित किया गया था तथा इसमें विशेषज्ञों की सामूहिक परिचर्चा भी हुई।

अपने उद्घाटन भाषण में ई.सी.सी के निर्देशक मणी चाको ने सार्वभौमिक मूल्यों की ओर अग्रसर होने तथा धर्म से परे होकर सोचने की आवश्यकता पर बल दिया। आई.सी.एस.ए के निर्देशक डा. मोजेज मनोहर ने मुख्य भाषण दिया और इस समस्या पर नये नज़रिये से विचार करने, सरकार की ओर से संवेदनशीलता दिखाने तथा धार्मिक संगठनों की ओर से लोगों की अन्तरात्मा को अपील करने की आवश्यकता पर बल दिया।

विशेषज्ञों की सामूहिक परिचर्चा में भाई दुरई ने कहा कि किस प्रकार हमें धर्म से आगे निकल कर आध्यात्मिकता में प्रवेश करने और हर एक में आन्तरिक परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। इस प्रकार समाज में बड़े पैमाने पर परिवर्तन लाना होगा।

अधिकांश प्रतिभागियों ने इस गोष्ठी की खूब प्रशंसा की बल्कि कुछ गहन धार्मिक पृष्ठभूमि वाले लोगों पर भी इसका प्रभाव देखा जा सकता था।

बहनों के लिये कार्यशाला

इंदौर केन्द्र ने २१ मार्च को अभ्यासी बहनों के लिये आधे दिन की विशेष कार्यशाला का आयोजन किया । इस कार्यक्रम का विषय था 'अभ्यासी बहनों द्वारा अनेक भूमिकाओं का पालन करते हुए संतुलित साधना'। इस कार्यशाला में इंदौर तथा आसपास के केन्द्रों से लगभग १०० बहनों ने भाग लिया। बहन विजया देशपांडे ने खुलासा किया कि हालांकि पुरुषों तथा महिलाओं के लिये हमारे यहाँ एक ही साधना पद्धति है और परम तत्व में विलीन होने वाली आत्मा भी एक ही होती है; लेकिन फिर भी इस भूमंडल पर अलग-अलग भूमिकाएं अदा करने के लिये लिंगभेद की व्यवस्था है। हमारे लिये यह समझना बेहद जरुरी है कि गुरुदेव उसी चीज को हमसे किस प्रकार अलग-अलग ढंग से करवाना चाहते हैं। ' बहनों ने एक गृहणी, शिक्षिका, डाक्टर या मजिस्ट्रेट के रूप में कार्य करते हुए अपने साधना सम्बन्धी अनुभवों का आदान-प्रदान किया।

कार्यशाला के दूसरे भाग में बहनों के लिये साधना काल में सामने आयी विशेष समस्याओं पर चर्चा करने के लिये एक सामूहिक परिचर्चा का आयोजन किया गया । रसोईघर तथा अन्य क्षेत्रों में सेवा कार्य करते हुए अभ्यासी भाइयों ने इस कार्यशाला में अपना सहयोग दिया।

प्रकाशन विभाग से संदेश

यह पाया गया है कि अभ्यासी, गुरुदेव की औपचारिक/अनौपचारिक वार्ताओं की प्रतिलिपि ई-मेल से परिचालित करते हैं, जो मेल श्रृंखला से आगे भेजी जा रही हैं। ऐसी प्रतिलिपि में त्रुटियां रह सकती हैं तथा गुरुदेव द्वारा कही गई बातों को हुबहू प्रेषित करने के बजाय विचार और व्याख्याएं होती हैं- इस प्रकार इनसे हमारी संस्था को ज़ोखिम पैदा हो सकता है।

कृपया ध्यान दें कि इस प्रकार के अनधिकृत संस्करणों के परिचालन की अनुमति/आदेश नहीं है। सभी अभ्यासियों से अनुरोध है कि अनधिकृत प्रतिलिपि के निजी परिचालन से बाज आयें और ऐसे कार्य को हतोत्साहित करें और रोकें। इस प्रकार के अनधिकृत परिचालन की किसी भी घटना की रिर्पोट तत्काल publications.print@srcm.org पर भेजें।

गुरुदेव की वार्ताओं की अधिकृत प्रतिलिपि, वार्ता देने के कुछ ही दिनों में मिशन की वेबसाइट (www.sahajmarg.org) पर प्रकाशित की जाती है। ये सभी के लिये किसी भी संदर्भ हेतु उपलब्ध हैं।

अतीत की झलक

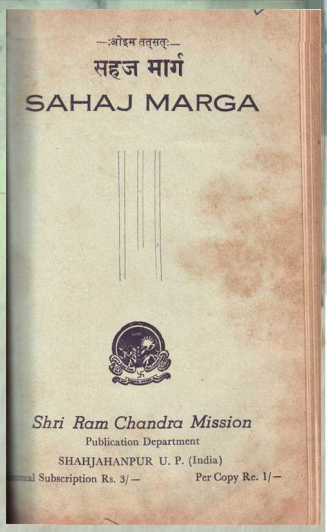

पूज्य बाबूजी महाराज ने १९६०-१९६५ के दौरान संपूर्ण भारत का भ्रमण किया था। उनके १९६४-६५ का भ्रमण-कार्यक्रम 'सहज मार्ग' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था । इस सूची में निम्नलिखित स्थान शामिल थे-दिल्ली, विजयवाड़ा, हैदराबाद, बीदर, सेदाम, गुलबर्गा, बीजापुर, हासन, मैसूर, बंगलोर, तिरुवनामल्लाई, त्रिची, तिरुपति, कड़प्पा, चेन्नई, भोपाल, ओरई तथा लखनऊ।

इन यात्राओं के दौरान बाबूजी महाराज ने कई संदेश दिये थे। उनमें से कुछ संदेशों का सारांश नीचे दिया गया है।

सितम्बर १९६०

“आध्यात्मिकता के लिये संयम सबसे आवश्यक है। इस शब्द का व्यापक अर्थ है। इसका सम्बन्ध केवल हमारे जीवन के बाह्य तौर-तरीकों में सुधार करने से ही नहीं है ताकि वे दूसरों के अनुरूप बन सकें, बल्कि इसमें हमारे संपूर्ण मानसिक तथा भौतिक क्रिया-कलापों का समावेश होता है।”

स्रोतः 'मेसेज़ेज यूनिवर्सल' 'मेसेज ऑफ माई मास्टर'

मार्च १९६४, होली पर बाबूजी का संदेश

'मंजिल तक वही पहुँच पाते हैं, जो उसे पाने के लिये दीवाने होते हैं। यही एकमात्र रास्ता है और जिसने भी इसे अपनाया है, उसे सफलता अवश्य मिली है। लेकिन इसके लिये आपको अपने दिल में 'दर्द' पैदा करना होगा। जब दर्द होता है, तो दवा अवश्य आती है। सभी तरीकों और साधनाओं का यही उद्देश्य होता है।'

"जो भी कुछ घटित होता है, वह हमेशा भगवान की इच्छा के अनुरूप ही घटित होता है। कठिनाई तब पैदा होती है, जब हम उसे अपने प्रयासों का परिणाम समझकर, अपनी खुद की इच्छा या कर्म के साथ जोड़ लेते हैं। केवल इसीलिए, हम सफलता पर ज़श्न मनाते हैं और विफलता पर दुखी होते हैं। केवल यही चीज हमारे लिए बेड़ियों का कार्य करती है। इस अहंकार भाव के अभाव का अर्थ है वास्तविक प्रबल ओज का आगमन। इसे कैसे हासिल किया जा सकता है? केवल हमारे स्व को महान दिव्य शक्ति के साथ जोड़कर। ऐसा करने से हम अवस्था दर अवस्था आगे बढते जाते हैं, जब तक कि हम उसके निकटतर नहीं पहुँच जाते।"

'तथापि, कुछ लोग अपने दिमाग को थोड़ी देर विश्राम देने के लिए ही मेरे पास बैठते हैं। इससे मेरा भी कुछ भला हो जाता है, क्योंकि, भले ही थोड़ी देर के लिए ही सही लेकिन मैं उन्हें आराम पहुँचा देता हूँ। लेकिन इतना करना पर्याप्त नहीं है। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो सखा भाव या मित्रता के कारण मुझसे जुड़े हुए हैं; आत्मसाक्षात्कार से उनका कोई मतलब नहीं होता। मेरे लिए तो यह भी कोई कम बड़ी बात नहीं है क्योंकि जब मैं किसी के हृदय में खुद के लिये प्रेम देखता हूँ, तो मुझे बहुत आनन्द और ताज़गी का अहसास होता है। लेकिन जब किसी के पास प्रेम और चाहत के लिए इतना कुछ हो, तो वह मेरी ख़ातिर इन सब बातों की परवाह क्यों करेगा। कदाचित वही व्यक्ति मेरी ओर अग्रसर हो सकता है, जिसने स्वयं को भुला दिया हो या कम से कम सब कुछ भुलाना चाहता हो। मेरी मानसिक प्रवृति बहुत विचित्र है। अपना सर्वस्व लुटाने के बाद मैं चाहता हूँ कि कोई मुझे ढूँढ निकाले।'

स्रोतः 'सहज मार्ग' पत्रिका, जुलाई, १९६४

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया समाचार–पत्र

निबन्ध लेखन प्रतियोगिता २००९

प्रमाण–पत्र वितरण

श्री रामचन्द्र मिशन ने संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र, भारत और भूटान के साथ मिलकर १२ अगस्त २००९ को अन्तराष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर निबन्ध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया। गुरुदेव के सन्देश को बच्चों और उनके माध्यम से उनके परिवारों तक पहुँचाने का यह एक बड़ा प्रयत्न था।

इन ढेर सारे निबंधों को पढ़ने और उनमें से बेहतरीन निबन्धों को छाँटने का प्रयास ही अपने आपमें बहुत बडा कार्य था। भारत के सभी केन्द्रों में स्वयंसेवकों ने इसका कार्यभार उठाया तथा स्कूल, ज़ोन और राष्ट्रीय स्तर पर प्रविष्टियों का चयन किया। विशेष निबन्ध लिखने वाले विद्यार्थियों को बधाई देने के लिये मुख्य केन्द्रों पर प्रमाण–पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इसके द्वारा केन्द्रों को मिशन के बारे में और निबन्ध लेखन प्रतियोगिता के पीछे छिपे उद्देश्यों के बारे में विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों एवं स्कूल के अन्य कर्मचारियों को बताने एवं समझाने का एक अवसर भी मिला। अभिभावक और अध्यापक इस बात से खुश थे कि मिशन, इस प्रतियोगिता के द्वारा बच्चों में मूल्यों का समावेश करने के लिये प्रयत्नरत है। बहुत लोग सहज मार्ग पद्धति से प्रभावित हुये तथा मिशन के बारे में ज्यादा जानने या सम्मिलित होने के इच्छुक दिखे। इस प्रतियोगिता के ज़रिये बहुत से अभ्यासियों को अपनी अलग–अलग क्षमताओं के साथ मिशन के लिये कार्य करने का अवसर मिला।

नीचे इस बात का विवरण दिया गया है कि भारत के सभी केन्द्रों पर किस प्रकार प्रमाण–पत्र वितरण समारोह संचालित किया गया।

पट्टाम्बी, केरल

२१ फरवरी को ३२ विद्यार्थियों को बधाई दी गई। भाई वी. ए. कृष्णा, भाई के. पी. शशिकुमार तथा भाई नारायणन ने श्रोतागणों से बात की। विद्यार्थियों ने अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करते हुए कहा कि विषय नये, आकर्षक और वर्तमान समय के अनुकूल थे।

अहमदाबाद

अहमदाबाद में लगभग १९० संस्थाओं ने अपने स्थानों पर इस निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया तथा ८५०० प्रतिभागियों ने अपनी–अपनी श्रेणियों में निबन्ध लिखे। प्रतियोगियों में ६ प्रादेशिक विजेता थे। अहमदाबाद के वरिष्ठ अभ्यासियों ने २८ फरवरी को अदलज योगाश्रम में विजेताओं को प्रमाण–पत्र वितरित किये। अभिभावक और प्रतिभागियों समेत १२०० से अधिक अतिथिगण उपस्थित थे।

मुरादाबाद

मुरादाबाद जिले के लगभग ८४ स्कूल एवं कॉलेज के ६७०० से अधिक विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। २४ फरवरी को योगाश्रम में भाई श्रवण कुमार (केन्द्र–प्रभारी) तथा बहन छवि ने सभा को सम्बोधित किया। प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र देने के साथ–साथ स्कूल एवं कॉलेज़ को भी प्रशंसा–प्रमाणपत्र दिये गये। मुख्य अतिथि श्रीमान राम मूर्ति (मुख्य विकास अधिकारी, मुरादाबाद) ने ऐसी प्रतियोगिताओं के ज़रिये बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करने हेतु मिशन के प्रयासों की सराहना की।

अभिदोनपुरा, उत्तर प्रदेश

२१ फरवरी को विभिन्न स्कूल एवं कॉलेज़ों के लगभग १८० विद्यार्थियों,

२२० अभिभावकों, अध्यापकों एवं प्रधानाध्यापकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। विद्यार्थियों और अभिभावकों को निबन्ध प्रतियोगिता के फायदे के बारे में बताया गया तथा बाद में प्रमाणपत्र वितरित किये गये।

कोल्हापुर, महाराष्ट्र

१८ फरवरी को आयोजित समारोह में कुल मिलाकर ७५ स्कूल एवं ६ कॉलेज़ों ने भाग लिया तथा लगभग ३५०० निबन्ध एकत्रित हुये। महाराष्ट्र ज़ोन के प्रभारी भाई सुभाष वैद्य्या ने सभा को सम्बोधित किया।

ओरंगाबाद, महाराष्ट्र

२७ फरवरी को इनाम जीतने वाले विद्यार्थियों, उनके अभिभावकों तथा स्कूल के प्रधानाचार्यों की उपस्थिति में समारोह आयोजित किया गया।

नागपुर, महाराष्ट्र

७ मार्च को गाँधीनगर आश्रम में आयोजित समारोह में २४ स्कूलों से आये १००० से भी अधिक विद्यार्थियों ने इस निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में हिस्सा लिया।

इंदौर

२१ फरवरी को लगभग २४ केन्द्रों ने जनसभा का आयोजन किया। स्वंयसेवकों के दल ने न सिर्फ प्रत्येक स्कूल का दौरा किया बल्कि विद्यार्थियों के घर जाकर उनके माता–पिता को भी आमंत्रित किया। जिसका परिणाम बहुत ही प्रेरणादायक था। फलस्वरूप छोटे एवं दूर दराज के केन्द्रों पर भी भारी मात्रा में लोग एकत्रित हुये। इन जनसभाओं के माध्यम से लगभग ३००० से ३५०० अतिथियों को सहज मार्ग से अवगत कराया गया।

पुणे

नांदेण आश्रम के उत्सव पर बहन रूपाली ने कहा कि सामान्यत: हम लोग नकारात्मक सोचते हैं, जिसको बदलने की जरूरत है। हम चाहते हैं कि युवा अपने अन्दर झाँके तथा दुनिया का सामना करने के लिये अपनी अन्तरात्मा को खोजें क्योकि अन्दर की दुनिया से ही बाहर की दुनिया की उत्पत्ति होती है। भाई कौस्तुभ ने इस प्रतियोगिता के आंकडों की जानकारी दी तथा भाई शुक्ला (मुख्य अतिथि) ने "सहज मार्ग– मन को प्रशिक्षित करने की पद्धति" पर एक वार्ता दी। प्रशंसा के प्रतीक के साथ प्रमाणपत्र दिये गये। ब्लाइन्ड (नेत्रहीन) स्कूल के बच्चों के लिये काफी देर तक तालियां बजती रहीं।

बंगलोर

बंगलोर के वनसंकरी आश्रम में २१ फरवरी को पूरे ज़ोन के लिये प्रमाणपत्र वितरित किये गये। प्रत्येक श्रेणी के प्रथम पुरस्कार विजेता को अपना निबंध पढ़ने के लिये आमंत्रित किया गया। इनमें से प्रत्येक ने बहुत आत्मविश्वास तथा दिये गये विषय पर गहराई से सोचने की क्षमता का प्रदर्शन किया। अभ्यासियों के युवा एवम् आत्मविश्वास से भरपूर बच्चों ने

वी. बी. एस. ई. के प्रयोगों द्वारा ये दर्शाया कि कैसे विज्ञान के द्वारा मानवीय गुणों को सीखा जा सकता है। जिसने आगंतुकों के हृदय को छू लिया। गुरुदेव की एक छोटी वीडियो फिल्म दिखाई गई तथा इसके बाद बहन माधुरी वैंकट ने सहज मार्ग का संक्षिप्त परिचय दिया।

भावनगर, गुजरात

सिल्वर बेल ध्यान–कक्ष में २१ फरवरी को एक समारोह का आयोजन हुआ। निबन्ध संयोजक बहन वृसिका ने भावनगर केन्द्र के आंकड़े प्रस्तुत किये। भाई विनय तथा धर्मेश भाई (भावनगर केन्द्र–प्रभारी) ने सभा को संबोधित किया।

भुज

भुज केन्द्र के सहयोग कक्ष में २७ फरवरी को एक उत्सव का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग २५० अतिथियों ने भाग लिया। भाग लेने वाले ३२ स्कूलों के सभी प्रधानाचार्यों, माता–पिता एवं प्रमाण–पत्र प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों को भी आमंत्रित किया गया था। श्रीमान महेन्द्र सिंह मुख्य अतिथि थे। केन्द्र–प्रभारी बहन हर्षा चौहान तथा निबंध संयोजक भाई गोपी त्रिवेदी ने सभा को संबोधित किया।

इसी तरह गाँधीधाम केन्द्र पर भी अंजर क्षेत्र के विधायक मुख्य अतिथि थे तथा गाँधीधाम नगर पालिका के अध्यक्ष अति सम्मानीय अतिथि थे। कुल १८० से भी अधिक अतिथियों ने कार्यक्रम में शिरकत की।

चंडीगढ़

इस वर्ष की प्रतियोगिता में पंजाब विश्वविद्यालय – चंडीगढ, पंचकुला तथा मोहाली के विभिन्न शिक्षण विभागों, १६ स्कूलों तथा ४ कॉलेज़ों ने हिस्सा लिया। २८ फरवरी को ज़ोनल स्तर पर जीतने वाले विद्यार्थियों के सम्मान में एक उत्सव का आयोजन किया गया जिसको ज़ोनल संयोजक बहन कनन सचदेव, बहन गुरुदेव कौर तथा बहन सुदर्शन ने संबोधित किया। २७ ज़ोनल विजेताओं को ज़ोनल– प्रभारी मेज़र जनरल हरभजन सिंह के द्वारा पुरस्कार दिये गये।

लुधियाना

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के ज़ेकब हॉल में ११ फरवरी को ज़ोनल स्तर के ८ विद्यालयों तथा जिला स्तर के ४० विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। जोनल स्तर के विद्यार्थियों को प्रमाण–पत्र और स्मृति चिन्ह के साथ एक पुस्तक भेंट की गयी जबकि बाकी लोगों को 'मेरे गुरुदेव' पुस्तक के साथ प्रमाण–पत्र दिये गये। सेंट थोमस स्कूल को "बेस्ट पार्टिसिपेसन ट्राफी" से सम्मानित किया गया। सुविख्यात शिक्षा विशेषज्ञ डॉ. एम. ए. जहीर, डॉ. प्रेम कुमार एवं ज़ोनल केन्द्र–प्रभारी मेज़र जनरल हरभजन सिंह इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

पानीपत केन्द्र ने ४ अप्रैल को 'पानीपत रिफाइनरी आफिसर क्लब' में ३५ विद्यार्थियों के सम्मान में एक उत्सव का आयोजन किया। मुख्य अतिथि श्री राज कुमार घोष तथा अश्विनी शर्मा ने विजेताओं को पुरस्कार दिये। सभी स्थानीय अभ्यासियों ने इस उत्सव में हिस्सा लिया।

कोयम्बतूर

२२ फरवरी को ६० से भी ज्यादा स्कूलों के १२० विद्यार्थी, अपने माता–पिता के साथ नचिपलियम आश्रम आये। केन्द्र–प्रभारी भाई के. आर. वैद्यनाथन ने प्रतिभागियों का स्वागत किया तथा इनके बाद भाई टी. एस.

मनियम एवं बहन के. ईश्वरी ने वार्ता दी। भाई वेन्कट ने विद्यार्थियों को पुस्तक के साथ प्रमाणपत्र दिये। ये उन केन्द्रों से ज़ोनल विजेता थे जिन्हें 'माई मास्टर' पुस्तक के साथ प्रमाण–पत्र दिये गये थे। ४ संस्थाओं को प्रशंसा प्रमाण–पत्र दिये गये।

गुवाहटी

भाई सिद्धेश्वर पांडे ने ४ अप्रैल को गुवाहटी तथा आस–पास के क्षेत्रों से, स्कूल के अनुसार चुने गये सर्वश्रेष्ठ दो निबंधों के ९० विजेताओं को प्रमाण–पत्र वितरण हेतु एक कार्यक्रम का आयोजन किया। भाई अशोक सेनगुप्ता ने सभा को एक प्रस्तुति दी। उसके बाद एक संक्षिप्त प्रश्नोत्तर सत्र रखा गया।

हुबली, कर्नाटक

इस निबंध प्रतियोगिता के कारण हुबली तथा धारवाड़ के स्वयंसेवकों में बहुत उत्साह एवं भाईचारे की भावना उत्पन्न हुई। मुख्य अतिथि श्री विष्णु भास्कर भट्ट ने आज के समाज में इस तरह के प्रयास के महत्व पर प्रकाश डाला। वह इस बात से अनभिज्ञ थे कि एक ऐसे मिशन का अस्तित्व है, जो बिना किसी प्रचार के कार्य करता है। सरकारी स्कूल के मुख्य अध्यापक श्री सारंगमथ ने कहा कि ऐसे बहुत कम लोग एवं संस्थायें हैं, जो जैसा कहते हैं, उस पर अमल भी करते हैं। तथा उन्होंने पाया कि श्री राम चन्द्र मिशन एक ऐसी संस्था है, जो वही कर रही है, जैसा करने को कहती है। लगभग ७० विद्यार्थियों को प्रमाण–पत्र दिये गये। युवाओं और बच्चों ने दो छोटी नाटिकाएं प्रस्तुत की, जो बहुत मनोरंजक थीं तथा सभी को बहुत पसंद आयी।

लखनऊ

लखनऊ में १८० स्कूलों और कॉलेज़ों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। भाई उमा शंकर बाजपेयी ने विभिन्न श्रेणी के विजेताओं को पुरस्कार दिये। ज़ोन–प्रभारी भाई श्याम जी मल्होत्रा ने इस अवसर पर वार्ता दी।

तेजपुर

११ अप्रैल को विजेताओं, उनके माता–पिता तथा अध्यापकों समेत २०० अतिथि एकत्रित हुए। कुछ जिज्ञासुओं ने अभ्यास प्रारम्भ करने की इच्छा ज़ाहिर की। कार्यक्रम का समापन मिशन की प्रार्थना के साथ हुआ।

त्रिसुर, केरल

त्रिसुर के योगाश्रम पर २८ फरवरी, रविवार को भाई टी. पी. नारायाणन, केन्द्र–प्रभारी ने विभिन्न स्कूलों एवं कॉलेज़ों के विद्यार्थियों, उनके माता–पिता तथा अध्यापकों का सभा में स्वागत किया। ३१ स्कूल के लगभग ८०० विद्यार्थियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। स्मृति के संयोजक भाई ए. माधवन ने सभा को संक्षेप में संबोधित किया। केन्द्रिय–प्रभारी भाई के. यू. मोहन ने विद्यार्थियों को प्रमाण–पत्र तथा संस्थानों को प्रशंसा–प्रमाणपत्र वितरित किये।

बडोदरा

२८ फरवरी को अल्कापुरी के बडोदरा हाई स्कूल में लगभग २०० अतिथि एकत्रित हुए। बहन पूनम बब्बर, सूरत के डॉ. सुरेन्द्र अग्रवाल, बहन प्रभा शर्मा तथा भाई हिरेन शाह ने सभा को संबोधित किया। अतिथियों को अपनी राय व्यक्त करने के लिये एक फार्म दिया गया, जिसमें बहुत सारे लोगों ने सहज मार्ग से जुड़ने की इच्छा ज़ाहिर की।

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम

मुरादाबाद

७ मार्च को मुरादाबाद केन्द्र में भाई सुधांशु ने करीब ३० अभ्यासियों के लिये ए.टी.पी. – प्रथम स्तर (अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम) का आयोजन किया। वे सभी श्रद्धेय बाबूजी तथा गुरुदेव के ओडियो और वीडियों के बिरले अंशों को देखकर काफी प्रसन्न हुए। उसके बाद कई लोगों ने कार्यक्रम के बारे में अपनी राय देते हुए कहा कि नये अभ्यासियों के लिये इस तरह के कार्यक्रम बहुत फायदेमंद हैं। उन्होंने यह भी बताया कि वे पद्धति को अब पहले से अधिक बेहतर समझ सके हैं और इस कार्यक्रम द्वारा उन्हें अपना लक्ष्य प्राप्त करने की प्रेरणा मिली है।

ननौता

भाई राजीवकुमार ने ४ अप्रैल, रविवार को ए.टी.पी. – प्रथम स्तर का आयोजन किया जिसमें २४ अभ्यासियों ने भाग लिया।

श्रीविल्लीपुथुर

७ मार्च को बहन बी. पुन्नुथाई और भाई वी. बालासुब्रमनियम ने विरुदुनगर जिले के इस केन्द्र में ए.टी.पी. कार्यक्रम का आयोजन किया। श्रीविल्लीपुथुर, राजपलयम, थिरुथन्गल, शिवाकासी केन्द्र के लगभग २५ अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। अभ्यासियों ने महसूस किया कि यह कार्यक्रम न सिर्फ नये अभ्यासियों के लिये बल्कि बाकी सभी लोगों के लिये भी फायदेमंद है।

करनूल

यहाँ पर २८ फरवरी को २३ नये अभ्यासियों के लिये ए.टी.पी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के दौरान बड़े उत्साह और बातचीत के ज़रिये बहुत सारी बातों का स्पष्टीकरण किया गया। प्रतिभागियों ने बताया कि ओडियो-वीडियो में गुरुदेव द्वारा दिये गये स्पष्टीकरण से उनकी साधना से सम्बन्धित ज्यादातर प्रश्नों के हल उन्हें मिल गये।

बेल्लारी

१४ फरवरी को बेल्लारी में ध्यान-कक्ष में, भाई सोन्था सुधाकर के निवास-स्थान पर ए.टी.पी. का आयोजन हुआ। कन्नड़ में आयोजित इस कार्यक्रम में लगभग २५ अभ्यासियों ने भाग लिया। इस अवसर पर भाई निजालिंगप्पा, भाई प्रह्लाद पकनीकर और भाई राजू कासमपुरकर ने वार्ताएं दी। अभ्यासियों ने महसूस किया कि वे इस कार्यक्रम से बहुत लाभन्वित हुए हैं तथा ऐसे कार्यक्रम और जल्दी-जल्दी आयोजित किये जाने चाहिये।

सिक्का

सिक्का, दूर-दराज के इलाके में स्थित जामनगर का उपकेन्द्र है। इसका विकास हाल ही में हुआ है और यहाँ ६० से भी ज्यादा उत्साहित अभ्यासी हैं। ११ अप्रैल को अहमदाबाद के भाई अंकित व्यास ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। जब भाई अंकित स्लाइड्स का हिन्दी में ब्यौरा दे रहे थे, प्रतिभागियों के चेहरों पर उत्साह देखा जा सकता था। जब कभी भी गुरुदेव की वार्ता के अंश चलाये जा रहे थे, सभी ने कार्यक्रम में गुरुदेव की उपस्थिति को महसूस किया।

राजनन्दगाँव

२८ मार्च को भाई दीपक त्यागी और भाई विजय अय्यर द्वारा आस-पास के केन्द्रों के ५४ अभ्यासियों के लिये हिन्दी में ए.टी.पी का आयोजन किया गया। प्रस्तुति से सभी अभ्यासी बहुत खुश थे और उन्होंने महसूस किया कि पहली बार उन्होंने अपने आपको कार्यक्रम में इतना संलग्न पाया है क्योंकि उन्हें चीजों को पढ़कर उन्हें आत्मसात करना था। और सबसे बड़ी बात यह थी कि गुरुदेव की सुक्तियों से या वीडियों पर दिखाये गये उनकी वार्ताओं के अंश से, उन्हें अपने सारे प्रश्नों के हल मिल गये थे।

पेन्द्रा

छत्तीसगढ़ राज्य के दूर दराज के इलाके में स्थित पेन्द्रा केन्द्र में ए.टी.पी. कार्यक्रम का हिन्दी भाषा में आयोजन किया गया। ५८ भाइयों और बहनों के अलावा ग्रामीण इलाके की ४० बहनों ने भी भाग लिया, लेकिन वे जिस तरह से इस कार्यक्रम का हिस्सा बनीं, वह कल्पना से परे है। वहाँ भंडारे जैसा वातावरण था। इस कार्यक्रम का आयोजन भाई स्वप्निल खत्री ने किया तथा इसका संचालन भाई दीपक त्यागी, भाई श्रीनिवास और बहन ललिता त्यागी ने किया।

रायपुर

४ अप्रैल को हिन्दी में ५२ अभ्यासियों के लिये ए.टी.पी. का आयोजन किया गया। अभ्यासियों ने बहुत उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लिया तथा भाई दीपक त्यागी ने एक अच्छे प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया। ए.टी.पी. का संचालन भाई विष्णु उपाध्याय, भाई सतीश शर्मा और भाई देवनारायण ने किया।

बिलासपुर

७ मार्च को हिन्दी में ए.टी.पी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिस तरीके से स्मृति ने इस कार्यक्रम को तैयार किया है, उसकी सभी अभ्यासियों ने सराहना की।

दुर्ग

भाई डी. के. निगम, केन्द्र-प्रभारी द्वारा शुरू किये गये ए.टी.पी कार्यक्रम का आयोजन २१ फरवरी को हिन्दी में किया गया। ३७ अभ्यासी भाइयों और बहनों ने इस कार्यक्रम में बहुत ही शांत और उत्साह भरे वातावरण में भाग लिया। इसका आयोजन भाई दीपक त्यागी (ज़ोन-प्रभारी) और भाई श्रीनिवास देशमुख द्वारा किया गया। भाई दीपक त्यागी द्वारा संचालित प्रश्नोत्तर सत्र को अभ्यासियों ने बहुत सराहा, जो बहुत ही दिलचस्प था।

जामनगर

'संतुलित अस्तित्व और ध्यान' विषय पर, लोगों से भरे टाउन हॉल में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। अभ्यासियों को, इस गोष्ठी पर अपने मित्रों, सम्बन्धियों, और सहकर्मियों को आमन्त्रित करते समय, उनसे मिशन के बारे में बातचीत करने का अवसर मिला। गोष्ठी का शुभारम्भ २ शास्त्रीय नृत्यों के साथ हुआ। बहन जयश्री लालभाई ने सहज मार्ग के अपने अनुभवों को सबके साथ बाँटा और आज के जीवन में ध्यान के द्वारा संतुलित जीवन जीने की आवश्यकता पर जोर दिया।

भाई हिरेनभाई शाह ने ध्यान की सहज मार्ग पद्धति तथा हमारे दैनिक जीवन में इसकी भूमिका के बारे में सबको बताया। भाई सुरेश राजगोपालन ने मानव जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को पाने में सहज मार्ग पद्धति की गुणवत्ता बताई। उन्होंने इस बात का भी ज़िक्र किया कि कोई भी व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक उन्नति को क्षति पहुँचाये बिना किस प्रकार भौतिक जीवन जी सकता है।

सभी वार्ताओं के बाद श्रोताओं को वक्ताओं या श्री रामचन्द्र मिशन के स्वयसेवकों से बातचीत करने का मौका मिला। उनमें से कुछ लोगों ने पद्धति के बारे में और ज्यादा जानकारी हासिल करने की इच्छा ज़ाहिर की और कुछ लोगों ने तुरन्त ही सहज मार्ग पद्धति में शामिल होने में दिलचस्पी दिखाई।

"अब एक आश्रम में (और मन्दिर में) क्या अन्तर है । आश्रम को भी महान गुरुदेव ही चार्ज करते हैं । लेकिन हर बार हमारे ध्यान में बैठने के साथ ही इस चार्ज में वृद्धि होती है । मन्दिरों में यह समय के साथ घटता रहता है; जबकि आश्रम में यह हर समय बढ़ता रहता है । अतः आश्रम में यदि आप वही कर रहे हैं जो आपको करना चाहिये, तो ५० साल बाद वहाँ पहले से बेहतर चार्ज होगा, पहले से भी मधुर वातावरण और कुछ ऐसी सूक्ष्म बात– जिसे देखकर आप कह सकते हैं, "यह स्वर्ग है, यही दिव्य लोक है ।"
७ जनवरी, २००४ । अन्गोल आश्रम के उद्घाटन के दौरान

ओंगोल आश्रम

एक छोटे से शहर में विशाल हृदयों की उत्पत्ति

ओंगोल, आन्ध्र प्रदेश में प्रकासम जिले का मुख्यालय है । यह एक अति रोचक घटना है कि १९६९ में, जब बाबूजी महाराज मद्रास की यात्रा पर थे, तब उनकी ट्रेन ओंगोल तथा उप्पुगुन्डुरू गाँव के बीच में, बाढ़ और चक्रवात (साइक्लोन) के कारण ७२ घंटों तक अटकी रही । बाबूजी महाराज ने अवश्य ही, आध्यात्मिकता का बीज उसी समय इस क्षेत्र में बो दिया होगा । और उसका परिणाम यह है कि आज यहाँ पर पूर्ण विकसित केन्द्र के साथ–साथ एक आश्रम तथा सैकड़ों अभ्यासी हैं ।

सन् ९० की शुरुआत में भाई कुप्पुस्वामी की देखरेख में सिर्फ कुछेक अभ्यासी ही थे । सन् १९९४ में भाई बी नागेश्वर ने मिशन में प्रवेश किया तथा उनकी दीर्घकालिक उपयोगी सेवा के कारण मिशन का बहुत विस्तार हुआ । १९९९ में ओंगोल शहर, चिमाकुरथी, मेडरामेटला तथा अड्डान्की गाँव को मिलाकर, यहाँ के अभ्यासियों की संख्या ३५० तक हो गई । भाई नागेश्वर राव को प्रशिक्षक नियुक्त किया गया । सत्संग उनके घर पर ही होता था । एक आश्रम की सख़्त आवश्यकता महसूस की गई तथा स्थानीय अभ्यासियों के सहयोग से आश्रम के लिये ५ एकड़ ज़मीन तथा कॉलोनी के लिये ४९ एकड़ ज़मीन ली गई । यह ज़मीन, ओंगोल शहर की सरहद में एस. एन. पाड्डु मंड़ल की परनमित्ता गाँव की सीमा में है ।

पूज्य गुरुदेव ने २२ दिसम्बर को प्रस्तावित भूमि का दौरा कर नींव का शिलान्यास किया और निर्माणकार्य की योजना पर अपनी सहमति दी । तत्पश्चात, निर्माण कार्य के निरीक्षण हेतु गुरुदेव ने २ बार इस जगह का दौरा किया । उन्होंने ७ जनवरी, २००४ को इस आश्रम का उद्घाटन किया और इसे अपने गुरुदेव बाबूजी महाराज को समर्पित करते हुए इसका नाम धरर्मामाश्रम रखा । इस शुभ अवसर पर करीब ६००० अभ्यासी इकट्ठा हुए । गुरुदेव ने इतने छोटे शहर में इतनी भव्य इमारत, जो एक महानगर के केन्द्र के योग्य है, को खड़ा करने के लिये स्थानीय अभ्यासियों के योगदान पर आभार व्यक्त करते हुए 'गिविंग हार्ट्स' नामक शीर्षक पर एक वार्ता दी ।

इस इमारत की पहली मंजिल पर २००० लोगों की क्षमता वाला एक बड़ा ध्यान–कक्ष है, जिसके सामने भव्य सीढ़ियां हैं । तहखाने में एक आवास–गृह, गुरुदेव की कॉटेज, रसोईघर, स्नानागृह, और जनरेटर का कमरा है । सुन्दर हरियाली और छायादार वृक्ष, इस आश्रम की सुन्दरता में चार चाँद लगाते हैं । ओंगोल आश्रम भी उन आश्रमों में से एक है, जिसे निःशुल्क खाना प्रदान करने वाला केन्द्र' घोषित किया गया है । यहाँ हर रोज़ प्रातः ६.३० बजे सुबह का सत्संग होता है ।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2009 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.